मीडिया समन्वय कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 13 सितंबर 2017

विज्ञान प्रौद्योगिकी नवोन्मेश में सहयोग के लिए यूगांडा का संसदीय प्रतिनिधिमंडल आया जेएमआई

यूगांडा का एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल जामिया मिल्लिया इस्लामिया :जेएमआईः से विज्ञान एवं अनुसंधान सहित विभिन्न क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए आज विश्वविद्यालय आया।

जेएमआई के वाइस चांसलर प्रो तलत अहमद ने यूगांडाई संसद की विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष संबंधी स्थायी समिति के प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए कहा कि यूगांडा के विश्विद्यालयों के साथ विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष के क्षेत्र में सहयोग करने में जेएमआई को खुशी होगी।

उन्होंने कहा कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया भारत के सबसे पुराने शैक्षिक संस्थानों में है। यह आज़ादी की लड़ाई का हिस्सा रहा है। ब्रिटिश शिक्षा के खिलाफ भारत की जरूरतों के मुताबिक शिक्षण संस्थान खोलने के महात्मा गांधी के आह्वान पर इसे बनाया गया था। उन्होंने कहा कि तबसे से लेकर अब तक राष्ट्रीय निर्माण में जेएमआई का बड़ा योगदान रहा है।

उन्होंने बताया कि जेएमआई जल्द ही जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन विभाग शुरू करने जा रहा है। विश्वविद्यालय में आधुनिक प्रयोगशालाओं से लैस इंजीनियरिंग विभाग, मल्टी डिसप्लनेरी सेंटर फॉर एडवांस स्टडीज़, कंप्यूटर साइंसेज़ और नैनो टेक्नोलॉजी जैसे मशहूर विभाग हैं।

यूगांडा की स्थायी संसदीय समिति के अध्यक्ष एंग के सस्कितालेको ने कहा कि उनके देश में भारतीय मूल के लोगों का यूगांडा के सकल घरेलू उत्पाद :जीडीपीः में

बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि उनके देश का संसदीय प्रतिनिधिमंडल यह तलाशने आया है कि भारत और यूगांडा के अकादमिक संस्थान आपस में कैसे सहयोग कर सकते हैं।

चर्चा के दौरान प्रोवाइस चांसलर प्रो शाहिद अशरफ और इंजीनियरिंग और विज्ञान से जुड़े जेएमआई के सभी विभागों के प्रमुख एवं डीन भी मौजूद थे।

यह प्रतिनिधिमंडल आज पूरे दिन जेएमआई रहा और उसने विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों और प्रयोगशालाओं को देखा। प्रतिनिधिमंडल ने इंजीनियरिंग, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवोन्मेष से जुड़े लगभग सभी विभागों के प्रमुखों से भी सहयोग के बारे में अलग अलग विचार विमर्श किया।

सीएसआईआर के पूर्व वैज्ञानिक प्रो मोहसिन यू खान ने कहा कि आज चीन और भारत दुनिया की सबसे तेज़ बढ़ती अर्थव्यवस्थाएं हैं और सारी दुनिया उनकी ओर देख रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय नेतृत्व ने आज़ादी के बाद देश और जनता के उत्थान के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवोन्मेष के महत्व को देखते हुए 1958 में ही इस संबंध में एक स्थायी संसदीय समिति का गठन कर दिया था और उसके नतीजे आज सबके सामने हैं।

प्रो साइमा सईद

मीडिया कोऑर्डनैटर